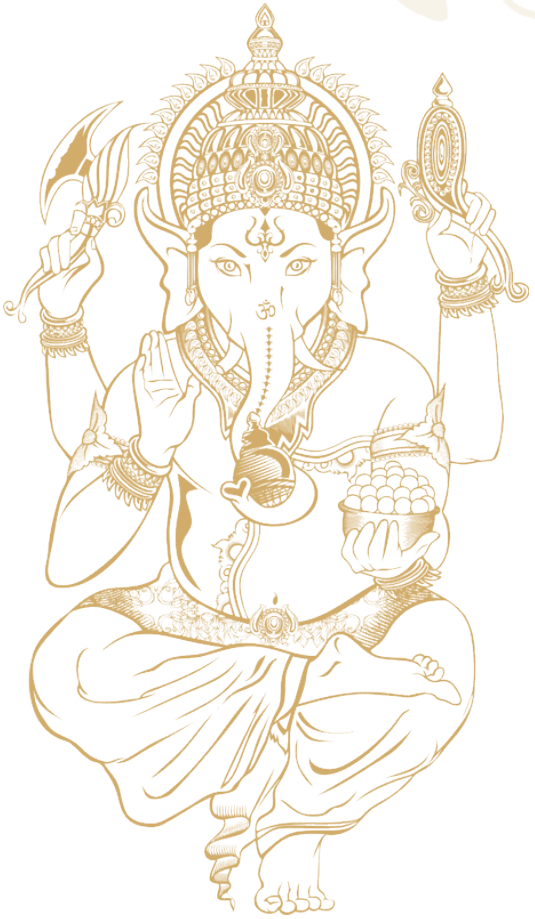

# Ritesh Sarangi

11 May 1997

06:30 AM

Bargarh

**Model: Baby-Horoscope** **Order No: 121826901**

**तिथि** 11/05/1997 **समय** 06:30:00 **वार** रविवार **स्थान** Bargarh **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:49:10
**अक्षांश** 21:38:00 उत्तर **रेखांश** 83:33:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:04:12 घंटे

### पंचांग

| | |
|---|---|
| साम्पातिक काल | 21:49:38 घं |
| वेलान्तर | 00:03:39 घं |
| सूर्योदय | 05:19:17 घं |
| सूर्यास्त | 18:25:24 घं |
| चैत्रादि संवत | 2054 |
| शक संवत | 1919 |
| मास | वैशाख |
| पक्ष | शुक्ल |
| तिथि | 5 |
| नक्षत्र | आर्द्रा |
| योग | धृति |
| करण | बव |

### अवकहड़ा चक्र

| | |
|---|---|
| गण | मनुष्य |
| योनि | श्वान |
| नाड़ी | आद्य |
| वर्ण | शूद्र |
| वश्य | मानव |
| वर्ग | सिंह |
| युँजा | मध्य |
| हंसक | वायु |
| जन्म नामाक्षर | छ-छत्रपति |
| पाया(रा.-न.) | रजत-रजत |
| होरा | शुक्र |
| चौघड़िया | उद्वेग |

### विंशोत्तरी

**राहु 2वर्ष 3मा 2दि**
**शनि**
**14/08/2015**
**13/08/2034**

| | |
|---|---|
| शनि | 16/08/2018 |
| बुध | 25/04/2021 |
| केतु | 04/06/2022 |
| शुक्र | 04/08/2025 |
| सूर्य | 17/07/2026 |
| चन्द्र | 15/02/2028 |
| मंगल | 26/03/2029 |
| राहु | 31/01/2032 |
| गुरु | 13/08/2034 |

### योगिनी

**मंगला 0वर्ष 1मा 15दि**
**संकटा**
**25/06/2024**
**25/06/2032**

| | |
|---|---|
| संकटा | 06/04/2026 |
| मंगला | 26/06/2026 |
| पिंगला | 05/12/2026 |
| धान्या | 06/08/2027 |
| भ्रामरी | 25/06/2028 |
| भद्रिका | 05/08/2029 |
| उल्का | 05/12/2030 |
| सिद्धा | 25/06/2032 |

| ग्रह | व | अ | अंश | राशि | नक्षत्र | पद | स्वामी | अं. | स्थिति | षट्बल | चर | स्थिर | ग्रह तारा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | 14:24:41 | वृष | रोहिणी | 2 | चंद्र | गुरु | --- | 0:00 | | | |
| सूर्य | | | 26:34:12 | मेष | भरणी | 4 | शुक्र | केतु | उच्च राशि | 1.63 | अमात्य | पितृ | साधक |
| चंद्र | | | 18:19:39 | मिथु | आर्द्रा | 4 | राहु | चंद्र | मित्र राशि | 1.16 | पुत्र | मातृ | जन्म |
| मंगल | | | 23:57:10 | सिंह | पू०फाल्गुनी | 4 | शुक्र | शनि | मित्र राशि | 1.25 | भ्रातृ | भ्रातृ | साधक |
| बुध | | | 05:51:33 | मेष | अश्विनी | 2 | केतु | राहु | सम राशि | 1.08 | कलत्र | ज्ञाति | प्रत्यारि |
| गुरु | | | 26:43:32 | मक | धनिष्ठा | 2 | मंगल | गुरु | नीच राशि | 0.78 | आत्मा | धन | अतिमित्र |
| शुक्र | | | 06:34:24 | वृष | कृतिका | 3 | सूर्य | बुध | स्वराशि | 1.50 | ज्ञाति | कलत्र | वध |
| शनि | | | 21:22:44 | मीन | रेवती | 2 | बुध | शुक्र | सम राशि | 1.01 | मातृ | आयु | क्षेम |
| राहु | व | | 03:24:25 | कन्या | उ०फाल्गुनी | 3 | सूर्य | शनि | मूलत्रिकोण | | --- | ज्ञान | वध |
| केतु | व | | 03:24:25 | मीन | उ०भाद्रपद | 1 | शनि | शनि | मूलत्रिकोण | | --- | मोक्ष | विपत |

## लग्न-चलित

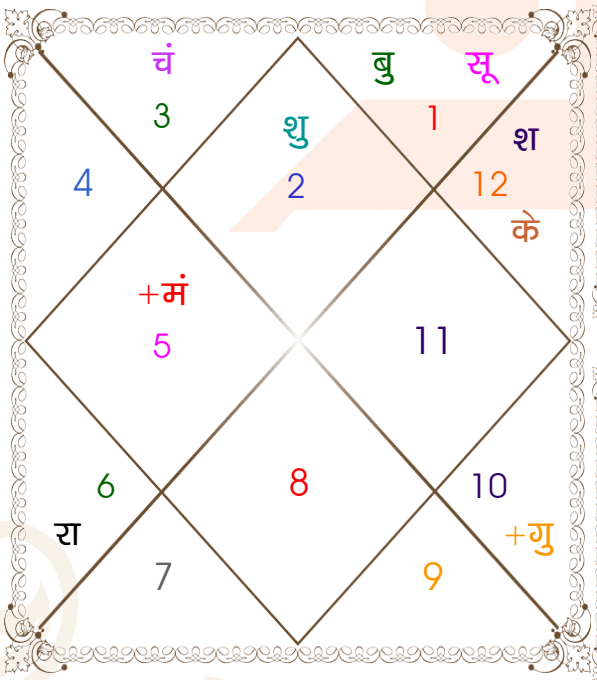


## चन्द्र कुंडली

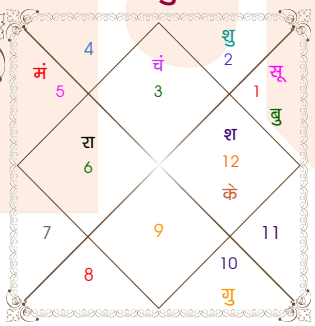


## नवमांश कुंडली

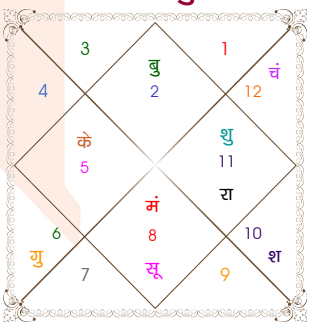


## सर्वाष्टकवर्ग

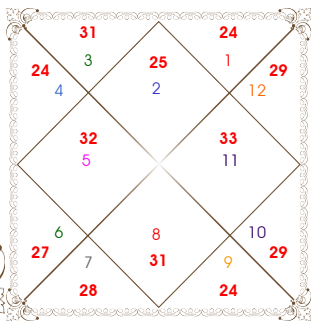


## दशमांश कुंडली

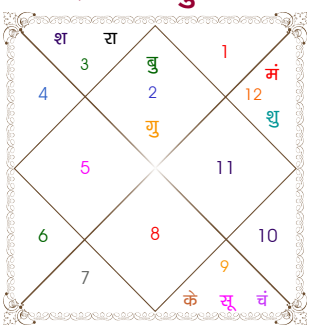

# नक्षत्रफल

आपका जन्म आर्द्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका शूद्र वर्ण, सिंह वर्ग, आद्य नाड़ी, श्वान योनि तथा मनुष्य गण होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का आधाक्षर "छ" होगा।

आप अपने जीवन काल में व्यस्तता या अन्य कारणों से भोजन समय पर लेने में प्रायः असमर्थ रहेंगे। आप में शारीरिक लावण्यता भी अल्प मात्रा में ही विद्यमान रहेगी। आपके स्वभाव में क्रोध की प्रबलता रहेगी तथा यदा कदा छोटी छोटी बातों पर आप अनावश्यक क्रोध का प्रदर्शन करेंगे साथ ही समाज में अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनके उपकार को अल्प मात्रा में ही स्वीकार करेंगे। दया एवं करूणा के स्थान पर कठोरता का भी प्रदर्शन करेंगे। तथा समीपस्थ सम्बन्धियों एवं आप प्रिय रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सहानुभूति प्राप्त होती रहेगी।

**क्षुधाधिको रूक्षशरीरकान्ति बन्धुप्रियः कोपयुतः कृतघ्नः।**
**प्रसूति काले च भवेत्किलार्द्रा दयाद्रचेता न भवेन्मनुष्यः।।**
**जातकाभरणम्**

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक क्षुधा से आतुर, रूक्ष शरीर वाला, कुपित रहने वाला, कृतघ्न तथा दया से हीन होता है।

आपमें चंचलता का भाव प्रबलरूप से विद्यमान रहेगा तथा आप किसी भी कार्य को स्थिर मन से करने में असमर्थ रहेंगे। साथ ही आप एक स्थान पर स्थिर नहीं रहेंगे तथा नित्य परिवर्तन की इच्छा करेंगे। आपके पास धनार्जन भी मध्यम रूप से ही होगा परन्तु शारीरिक बल से आप सर्वदा पूर्ण रहेंगे एवं अपने बाहुबल से समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आपकी शिक्षा भी मध्यम ही रहेगी परन्तु आचरण श्रेष्ठ रहेगा।

**कृतघ्नः गर्वितोहीनः नरो पापरतः शठः।**
**आर्द्रानक्षत्र सम्भूतो धनधान्य विवर्जितः।।**
**मानसागरी**

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य कृतध्न, गौरव विहीन, पापी तथा धन एवं धान्य से हमेशा हीन होता है।

आपके मन में अभिमान का भाव भी विद्यमान रहेगा साथ ही आपको अत्यन्त परिश्रम से महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त होंगी। आपका सामान्य जीवन संघर्षमय रहेगा एवं परिश्रम पूवर्क आप जीविकार्जन करेंगे। अन्य लोगों के प्रति आपमें प्रेम का भाव भी रहेगा अतः सामाजिक जनों से आप सौहार्द अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे।

**शठगर्वितः कृतघ्नो हिंस्रः पापश्च रौद्रर्क्षे।**
**बृहज्जातकम्**

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र का जातक कुटिल हृदय वाला, अभिमानी, कृतघ्न, हिंसक प्रवृति वाला तथा पाप कर्म करने वाला होता है।

आप का जन्म रजत पाद में हुआ है। अतः धन सम्पति से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आपके पास इसका अभाव नहीं रहेगा। साथ ही समस्त भौतिक सुखसंसाधनों को आप प्राप्त करेंगे एवं सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा दानशीलता की प्रवृति भी आपके मन में नित्य विद्यमान रहेगी। साथ ही सहनशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे। आप अपने सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रायः सफलता ही अर्जित करेंगे। आप की शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी तथा मुखाकृति सुन्दर एवं आकर्षक होगी। समाज में आप एक आदरणीय एवं श्रद्धेय पुरूष समझें जाएंगे। आप विस्तृत परिवार के भी स्वामी होंगे। अपने सम्भाषण में आप नित्य प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगे तथा सभी प्रकार के सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। विद्याध्ययन में आप रूचिशील रहेंगे तथा एक विद्वान के रूप में भी आप ख्याति प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही आप अल्प मात्रा में बोलना पसन्द करेंगे।

आप मिथुन राशि में पैदा हुए हैं। अतः आपके नेत्र श्यामवर्ण के होंगे तथा बालों में घुंघरालापन होगा। आपके शरीर के सारे अंग सुन्दर, स्वस्थ एवं सुडौल रहेंगे। इसके साथ ही नासिका भी उन्नत होगी । शास्त्रों के अध्ययन तथा ज्ञान प्राप्त करने की आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा अपने परिश्रम से शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करेंगे। आप दूत अथवा सन्देशवाहक के कार्य में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित रहेंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीव्र एवं तीक्ष्ण होगी । तीक्ष्णता के फलस्वरूप आप सम्मुख व्यक्ति के मनोभावों को जानने में सफल रहेंगे। आपका सामाजिक व्यवहार अत्यन्त ही विनम्र तथा विनय शील रहेगा फलतः समाज से यथोचित मान सम्मान प्राप्त करेंगे। वाणी आपकी श्रेष्ठ एवं प्रिय होगी जिससे श्रोता आपसे आकर्षित रहेंगे तथा आपकी प्रशंसा करेंगे। इसके अतिरिक्त आप हंसने तथा हंसाने के कार्य में भी निपुण होंगे तथा आपका हास्य प्रिय स्वभाव होगा। संगीत से आपका लगाव रहेगा तथा नृत्यशास्त्र के आप अच्छे जानकार होंगे।

**स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।**
**दूतः कुञ्चिद् मूर्धजः पटुमति हास्योद्गिगत द्यूतवित्।।**
**चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।**
**क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।**
**बृहज्जातकम्**

आपकी हथेली मत्स्य चिन्ह से सुशोभित रहेगी तथा नसें शरीर से बाहर दृष्टिगोचर होंगी। आपका रूप सुन्दर एवं दर्शनीय होगा। काव्य लेखन की प्रतिभा स्वाभाविक रूप से आप में रहेगी तथा अपने जीवन में समस्त सांसारिक तथा भौतिक सुखसंसाधनों से युक्त होकर आप

अपना जीवन व्यतीत करेंगे। सौभाग्य से आप युक्त रहेंगे लेकिन स्त्री से हमेशा पराजित रहेगें एवं उसके वश में रहेंगे।

**उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।**
**हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।**
**कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।**
**याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।**
**सारावली**

आयु आपकी पूर्ण रहेगी तथा लम्बे समय तक आप जीवन का उपभोग करते रहेंगे। आप भ्रमण या यात्रा के प्रति रूचिशील रहेगे तथा सुदूर क्षेत्रों की यात्रा या भ्रमण रूचि रहेगी। साथ ही घर के अन्दर रहकर भी शान्ति का अनुभव करेंगे।

**दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।**
**जातकपरिजातः**

समाज में आप अत्यन्त लोकप्रिय रहेंगे। सर्वजनों से आपके मैत्रीपूर्ण संबंध होंगे तथा वे आपका पूर्ण सम्मान करेंगे। स्त्री वर्ग के आप प्रिय होंगे तथा सभी आपको प्रिय एवं आदरणीय समझेंगे। आप अपनी योग्यता, प्रतिभा तथा सद्व्यवहार से समाज में गौरवान्वित होंगे।

**प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।**
**मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।**
**जातकाभरणम्**

आप अपने भाषण या लेखन कार्य में कठिन शब्दों का प्रयोग करेंगे परन्तु लोग उसे सुगमता पूर्वक ग्रहण करेंगे। आप अपने बन्धुजनों, रिश्तेदारों तथा अन्य सामाजिक लोगों के कल्याण कारी कार्यों में हमेशा तत्पर रहेंगे। आपकी प्रवृति पित तथा कफ से युक्त रहेगी तथा आचरण श्रेष्ठ रहेगा।

**मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।**
**परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।**
**प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।**
**भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।**
**जातक दीपिका**

आप की आखें चंचल होंगी। संगीत तथा नृत्य से आपका विशेष आकर्षण रहेगा तथा आपकी कीर्ति आपके सद्व्यवहार तथा धनैश्वर्य एवं विद्धता के कारण दूर दूर तक विख्यात रहेगी। शरीर की आपकी पूर्ण लम्बाई होगी तथा भाषण देने में आप अति कुशल होंगे। आप जिस चीज का संकल्प करेंगे उसे पूर्ण करके ही छोडेंगे चाहे उसके लिए आपको कितना ही परिश्रम क्यो न करना पडे। साथ ही आप न्यायवादी भी होंगे।

**मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।**
**गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।**
**गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।**
**समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।**
**मानसागरी**

आपका मनुष्य गण में जन्म हुआ हैं। अतः आप देवता तथा ब्राहमणों में हार्दिक श्रद्धा रखेंगे तथा नित्य नियमित रूप से पूजार्चन करेंगे। यदा कदा आप जीवन में अहंकार का भी प्रदर्शन करेंगे। आपका मन दया तथा करूणा के सद्भाव से हमेशा युक्त रहेगा तथा आप यथाशक्ति दीन दुःखियों को सहयोग प्रदान करेंगे। आप पूर्ण रूप से बलयुक्त रहेंगे। आप एक से अधिक कार्यों अथवा कलाओं के विशेषज्ञ होंगे तथा इनका प्रदर्शन भी सफलता पूर्वक करेंगे।। शास्त्राध्ययन में आपकी रूचि रहेगी तथा अपने परिश्रम से ज्ञानार्जन करने में सफल रहेंगे। आपका शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ रहेगा। इसके साथ ही आपके द्वारा बहुत से लोग सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

आप आजीवन धनैश्वर्य वैभव तथा सुखों का उपभोग करेंगे। आपकी आखें भी आकार में विशाल होगी तथा आप एक कुशल निशानेबाज भी होंगे। इसके अतिरिक्त नगरवासियों पर पूर्ण प्रभाव डालने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आपके शरीर का वर्ण गौर होगा।

**देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।**
**प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।**
**जातकाभरणम्**

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

श्वान योनि में जन्म होने के कारण आप हमेशा कार्य करने में तत्पर रहेंगे। बिना कार्य के आप खाली नहीं बैठेंगे। उत्साह भी पूर्ण रूप से आपके मन में विद्यमान रहेगा। अतः सोत्साह कार्य सम्पन्न करेंगे। आप स्वभाव से ही निर्भय होंगे तथा बहादुरी से समस्याओं का सामना करोगे। लेकिन अपने भाई बन्धुओं से आपका परस्पर मेल नहीं रहेगा परन्तु मां बाप के आप सच्चे सेवक होंगे तथा तन, मन, धन से आजीवन उनकी सेवा करेंगे।

**सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।**
**मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः।।**
**मानसागरी**

अर्थात् श्वान योनि में उत्पन्न जातक उद्यमी, उत्साह से परिपूर्ण, शूरवीर, अपने बन्धुवर्ग से द्वेष रखने वाला तथा माता पिता का भक्त होता है।

आपके जन्भ काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रूग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरें की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आपको मध्यम सुख प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा परन्तु यदा कदा शरीर से वे अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी वे आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आजीविका एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे। परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर इसमें कटुता का भी वातावरण बनेगा लेकिन यह अस्थायी रहेगा। साथ ही सुख दुःख एवं समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में आप उन्हें अपना आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। इस प्रकार मिलजुल कर आप अपनी अधिकांश समस्याओं का समाधान करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगे।

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां दोनों शुक्ल तथा

कृष्ण पक्ष की, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, सोमवार तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य 2,7,12 तिथियों, स्वाती नक्षत्र परिघयोग में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रय आदि शुभकार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही सोमवार तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी विशेष ध्यान रखें।

यदि आपके लिए अशुभ समय चल रहा हो मानसिक उद्विग्नता या शारीरिक व्याकुलता हो रही हो, व्यापार या नौकरी में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको नियमित रूप से प्रातः तथा सायं काल गणेश जी के शुभ दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार का व्रत रखना चाहिए। साथ ही पन्ना, हरा वस्त्र, गुड़, घी आदि पदार्थो का दान करना चाहिए तथा बुध के तांत्रीय मंत्र के 17000 जप करवाने चाहिए। इससे शुभ फलों में अभिवृद्धि होगी तथा अशुभ फलों का नाश होगा।

**ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।**
**मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।**